## Lecture 8:

**Prof Nirmal Kr Singh**
Associate Professor
Deptt of LSW
S.N.S.R.K.S College, Saharsa
Email: nirmalsingh245@gmail.com

# Industrial Relations:

## Topics:

1. **औद्योगिक सम्बन्धों के लक्षण (Features of Industrial Relations)**
2. **औद्योगिक सम्बन्धों के उद्देश्य (Objectives of Industrial Relations)**
3. **औद्योगिक सम्बन्धों के सिद्धान्त (Principles of Industrial Relations)**

### # 1. औद्योगिक सम्बन्धों के लक्षण (Features of Industrial Relations):

**औद्योगिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में कुछ महत्वपूर्ण लक्षण निम्न प्रकार दिये जा सकते हैं:**

(1) औद्योगिक सम्बन्ध शून्य में उत्पन्न नहीं होते (Do not Emerge in Vaccum) वरन् वे एक औद्योगिक ढाँचे में 'रोजगार सम्बन्धों' (Employment Relationship) से उभरते हैं । दो पक्षकारो की विद्यमानता के बिना-श्रम तथा प्रबन्ध उत्पन्न नहीं हो सकता है । यह उद्योग ही होता है जो औद्योगिक सम्बन्धों के लिए वातावरण का सृजन करता है ।

(2) औद्योगिक सम्बन्धों को टकराव तथा सहयोग (Conflict and Co-Operation) दोनों द्वारा स्पष्ट किया जाता है । यह विपरीत सम्बन्धों का आधार होता है । अत: औद्योगिक सम्बन्धों को केन्द्रित कर रहे पक्षकारों द्वारा तर्क दिये जाने वाले विकसित व्यवहारों, सम्बन्धों, रुझानों तथा प्रक्रियाओं के अध्ययन पर रहता है ताकि टकरावों एवं तनावों को समाप्त किया जा सके या उनको कम-से-कम न्यूनतम तो किया ही जा सके ।

(3) चूंकि श्रम तथा प्रबन्ध शून्य में काम नहीं करते वरन् एक व्यापक तंत्र के अंग होते हैं अत: औद्योगिक सम्बन्धों का अध्ययन व्यापक वायुमण्डलीय विषयों का भी

समावेश करता है जैसे कार्य स्थल की प्रौद्योगिकी (Technology of the Work Place), देश का सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक वातावरण, देश की श्रम नीति (Labour Policy), ट्रेड यूनियनों का रुझान, श्रमिकों तथा सेवायोजकों की

विचारधाराएँ ।

(4) औद्योगिक सम्बन्धों में श्रम-प्रबन्ध सहयोग के प्रति उपादेय परिस्थितियों तथा साथ-ही-साथ दोनो ही पक्षकारों से वांछनीय सहयोग को उजागर करने के लिए अपेक्षित व्यवहारों तथा प्रविधियों का अध्ययन शामिल है ।

(5) औद्योगिक सम्बन्ध कानूनों, नियमों नियम-विधानों समझौतों, न्यायालयों के निर्णयों, परम्पराओं तथा रीतियों और साथ ही साथ श्रम तथा प्रबन्ध के बीच सहयोग को सामने लाने के लिए सरकार द्वारा व्यवस्थित नीति ढाँचे का अध्ययन करते हैं ।

इसके अतिरिक्त, यह श्रम-प्रबन्ध सम्बन्धों के नियंत्रण में प्रशासकीय तथा न्यायिक (Executive and Judiciary) के व्यवधान पैटर्नों (Interference Pattern) की एक गहन समीक्षा भी करते हैं ।

वास्तव में औद्योगिक सम्बन्धों की विचारधारा अत्यन्त व्यापक आधारित है, जो अनेक संकायों से गहनता से जुड़ी है जैसे सामाजिक विज्ञान(Social Science), मानवशास्त्र (Humanities), व्यावहारिक विज्ञान (Behavioural Science), कानून (Laws), आदि ।

---

## # 2. औद्योगिक सम्बन्धों के उद्देश्य (Objectives of Industrial Relations):

औद्योगिक सम्बन्धों का मूल उद्देश्य श्रमिकों एवं प्रबन्धकों के मध्य अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना है ।

**सक्षेप में, औद्योगिक सम्बन्धों के उद्देश्य अग्र प्रकार हैं:**

(1) औद्योगिक शान्ति की स्थापना करना । (To Establish Industrial Peace.)

(2) श्रमिकों एवं प्रबन्धों के हितों की रक्षा करना । (To Protect Interest of Workers and Management.)

(3) औद्योगिक विवादों की रोकथाम करना । (To Prevent Industrial Disputes.)

(4) उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना । (To Raise Production Capacity)

(5) औद्योगिक प्रजातन्त्र की स्थापना करना । (To Establish Industrial Democracy.)

(6) पूर्ण रोजगार की स्थिति उत्पन्न करके अधिकतम रोजगार प्राप्त करना । (To Raise Full Employment Position.)

(7) श्रम-बदली तथा अनुपस्थिति दर में कमी करना । (To Lesser the Labour-Turnover and Absenteeism-Rate)

(8) उचित मजदूरी एव अच्छी कार्य-दशाएं प्रदान करके हड़ताल, तालाबन्दी तथा घिराव आदि कम करना । (To Eliminate Strikes, Lockout, Gheraos etc. by Providing Reasonable Wages and Good Working Conditions.)

(9) श्रमिकों के आर्थिक, सामाजिक हितों की रक्षा करना । (To Protect Workers Economics and Social Interests.)

(10) सार्वजनिक हित की दृष्टि से घाटे में चल रहे एवं रुग्ण उद्योगों पर राजकीय नियन्त्रण स्थापित करना । (To Establish Government Control over Sick Industrial Units and Unit Incurring Losses in Public Interest.)

(11) सार्वजनिक हित में उद्योगों का राष्ट्रीयकरण तथा समाजीकरण करना । (Nationalization and Socialization of Industries of Public interest.)

(12) देश की अर्थव्यवस्था के विकास में उच्च उत्पादकता के माध्यम से योगदान देना । (To Contribute in Development of the Country's Economy through High-Production.)

---

## # 3. औद्योगिक सम्बन्धों के सिद्धान्त (Principles of Industrial Relations):

औद्योगिक सम्बन्धों के सिद्धान्त श्रमिक वर्ग तथा नियोक्ता के मध्य मधुर सम्बन्धों की स्थापना करते हैं । जब तक इन दोनों वर्गों सम्बन्ध मधुर नहीं बनाये जाएंगे उस समय तक कोई भी सिद्धान्त प्रभावी नहीं होगा । इसलिए सिद्धान्त ऐसे होने चाहिए जिनका पालन करने से जल्दी से जल्दी इन दो वर्गों के बीच आपसी मनमुटाव समाप्त हो सकें तभी संगठन में अच्छे औद्योगिक सम्बन्धों का निर्माण हो सकेगा ।

**औद्योगिक सम्बन्ध के प्रमुख औद्योगिक सिद्धान्त निम्न हैं:**

**(1) औद्योगिक प्रजातन्त्र की स्थापना करना (To Establish Industrial Democracy):**

अच्छे औद्योगिक सम्बन्धों के लिए औद्योगिक प्रजातन्त्र की स्थापना करना आवश्यक है । इसके लिए कर्मचारियों को प्रबन्ध में भागीदार बनाकर उनका सहयोग प्राप्त करना चाहिये ।

**(2) दोनों वर्गों के संघों के बीच आपसी तालमेल की स्थापना (To Create Mutual Relation between Trade Unions and Employers Union):**

जब तक श्रम संघ तथा नियोक्ता सघों के बीच आपसी तालमेल विचारों का आदान-प्रदान नहीं होगा उस समय तक औद्योगिक सम्बन्ध अच्छे नहीं हो सकते इसी कारण इन दोनों वर्गों के बीच विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है ।

**(3) श्रम संघ तथा नियोक्ता संघ परस्पर अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के इच्छुक हो:**

जब तक श्रम संघ तथा नियोक्ता संघों की इच्छा संगठन में अथवा देश में अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने की नहीं होगी उस समय तक अच्छे औद्योगिक सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकते । इसके लिए प्रबन्धकों को श्रमिकों की भर्ती, चुनाव करने की विधियाँ, प्रशक्षण, मजदूरी, कार्य करने की दशाएँ, पदोन्नति आदि को बेहतर बनाना चाहिए ।

**(4) कर्मचारियों को मान्यता देना (Importance given to Personnel):**

संगठन में कर्मचारियों को पदानुसार मान्यता देनी चाहिए जैसे, "प्रबन्धक के बिना श्रमिक वर्ग उसी प्रकार बेकार सिद्ध होंगे जिस प्रकार श्रमिक के बिना प्रबन्धक ।" जब श्रमिकों को अधिक मान्यता दी जायेगी तो संगठन में हड़ताल, घिराव, तोड़फोड़, कार्य के प्रति लापरवाही, अधिक अनुपस्थिति, आदि सब समाप्त हो जायेंगे तथा अच्छे सम्बन्धों का निर्माण होगा ।

**(5) सामूहिक सौदेबाजी (Collective Bargaining):**

यदि संगठन में कोई श्रम-विवाद उत्पन्न हो जाये तो उनका समाधान सामूहिक सौदेबाजी से करना चाहिए । यह प्रणाली अच्छे औद्योगिक सम्बन्धों में सहयोग प्रदान करती है ।

----------*******The End*******----------